चाँद का झिंगोला

रामधारी सिंह 'दिनकर'

कवि परिचय

रामधारी सिंह 'दिनकर' जी का जन्म 30 सितम्बर, सन् 1908 को सिमरिया घाट, मुंगेर (बिहार) में हुआ । छात्रावस्था में ही 'दिनकर' का ओजस्वी कवि-रूप सामने आ गया । 'दिनकर' राष्ट्रीय भावधारा के प्रमुख कवि रहे । उन्हें शौर्य और वीरता का कवि माना जाता है ।

'दिनकर' जी की बहुमुखी प्रतिभा का विस्तार गद्य और पद्य दोनों में हुआ है । उनके काव्य ग्रंथों में प्रमुख हैं – रेणुका, हूँकार, रसवंती, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, हारे को हरिनाम, बापू, दिल्ली इत्यादि । गद्य ग्रंथों में प्रमुख हैं – देश-विदेश, मेरी यात्राएँ, अर्द्ध-नारीश्वर, मिट्टी की ओर, रेती के फूल, संस्कृति के चार अध्याय इत्यादि ।

'दिनकर' जी राज्य सभा के सम्मातित सदस्य रहे । भारत सरकार ने उनको 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया । उन्हें 'उर्वशी' महाकाव्य के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया ।

यह कविता :

बच्चे दिन-ब-दिन बढ़ते हैं । इसलिए उनकी पोशाक बड़ी साइज की बना ली जाती है । लेकिन चाँद घटता-घटता अमावस के दिन दिखाई नहीं देता । वह चाहता है कि उसके लिए एक झिंगोला या कुर्ता सिलवा दिया जाय । माँ पूछती है, बेटा, किस नापका बनाया जाय ? जिसे तू रोज-रोज पहन सके ?

इसमें एक मजाक और व्यंग्य है । सदा अस्थिर के लिए कुछ नहीं किया जा सकता ।

चाँद का झिंगोला

हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से वह बोला,
''सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का, मोटा एक झिंगोला ।
सन-सन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ,
ठिठुर-ठिठुर कर किसी तरह, यात्रा पूरी करता हूँ ।
आसमान का सफर और यह, मौसम है जाड़े का''
न हो अगर तो ला दो कुरता ही कोई भाड़े का ।''
बच्चे की सुन बात कहा माता ने, ''अरे सलोने !
कुशल करे भगवान, लगें मत, तुझको जादू-टोने
जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ,
एक नाप में कभी नहीं, तुझको देखा करती हूँ ।
कभी एक उँगल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,
बड़ा किसी दिन हो जाता है, और किसी दिन छोटा ।
घटना-बढ़ता रोज, किसी दिन, ऐसा भी करता है,
नहीं किसी की आँखों का, तू दिखलाई पड़ता है ।
अब तू ही यह बता, नाप तेरी किस रोज लिवाएँ,
सी दें एक झिंगोला जो, हर रोज बदन में आए ?''

शब्दार्थ :

झिंगोला – छोटे बच्चों का अंगरखा या कमीज । हठ – जिद्द । उन – भेड़-बकरी आदि के रोयें । आसमान – आकाश, गगन, नभ । नाप – माप । सफर – यात्रा । मौसम – ऋतु । जाड़ा – शीत । भाड़ा – किराया । सलोने – सुन्दर, मनोहर ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) एक दिन चाँद क्या हठ करने लगा ?

(ख) बिना झिंगोले से चाँद को क्या कष्ट होता है ?

(ग) माँ जाड़े से नहीं, पर किससे डरती है ?

(घ) माँ चाँद के लिए झिंगोला क्यों नहीं बना पाती ?

2. अर्थ स्पष्ट कीजिए ।

(क) हठ कर बैठा चाँद एक दिन माता से वह बोला,
सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला ।

(ख) बच्चे की सुन बात कहा, माता ने, ''अरे सलोने !
कुशल करे भगवान, लगें मत, तुझको जादू-टोने ।

(ग) कभी एक उँगल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,
बड़ा किसी दिन हो जाता है, और किसी दिन छोटा ।

(घ) अब तू ही यह बता, नाप तेरी फिस रोज लिवाए,
सी दें एक झिंगोला जो, हर रोज बदन में आए?''

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

(क) एक दिन चाँद ने माँ से क्या कहा ?

(ख) रात भर किस तरह की हवा चलती है ।

(ग) जाड़े में वह किस तरह मरता है ?

(घ) चाँद किस तरह यात्रा पूरी करता है ?

(ङ) यदि झिंगोला न मिले तो फिर चाँद क्या लेना चाहता है ?

(च) चाँद कभी कभी माँ को कितना चौड़ा दिखाई देता है ?

(छ) चाँद कितना गोरा दिखाई देता है ?

(ज) ऐसा कौन सा दिन होता है जब चाँद बिलकुल नहीं दिखाई देता ?

(झ) चाँद का झिंगोले के लिए नाप लेना क्यों संभव नहीं है ?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत / विलोम शब्द लिखिए ।

कुशल, जाड़ा, ठीक, मोटा, घटता

2. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए ।

हवा, वह, माता, बच्चा, भाड़ा, बड़ा, बात, दिन, यह ।

■ ■ ■